



सोमवार

28 सितंबर 2026, बरेली

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

PAGE NO 5 : MIDDLE

पुरुषमेधमेंदिखा मनुष्य के अस्तित्व का संघर्ष



एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार की शाम नाटक पुरुषमेध का मंचन करते कलाकार।

बरेली, वरिष्ठ संवाददाता। एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार शाम साहित्यकार दूधनाथ सिंह लिखित नाटक पुरुषमेध का मंचन हुआ। अम्बुज कुकरोती और विनायक कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रस्तुत नाटक ने सत्ता, परंपरा, धार्मिक कर्मकांड, स्वतंत्रता और मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े सवालों को प्रभावशाली ढंग से सामने रखा।

नाटक की कहानी युवराज पुरुरवा के राज्याभिषेक से शुरू होती है। पुरुरवा परंपरागत राजसत्ता और उन कर्मकांडों

का विरोध करता है, जिनमें उसे शोषण और हिंसा दिखाई देती है। उसके विचारों से सत्ता और पुरोहित वर्ग में टकराव पैदा होता है। महर्षि वशिष्ठ का उसे वैचारिक समर्थन मिलता है, जबकि इंद्र स्थापित सत्ता के प्रतिनिधि के रूप में सामने आते हैं।

इला और उर्वशी के पात्रों के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व, इच्छा और स्वतंत्रता के प्रश्न भी उठाए गए। अंत में पुरुरवा की हत्या कर दी जाती है, लेकिन उसके विचार और चेतना को जीवित रखने का संदेश दिया गया।